Acknowledgement

निवेदन

=====

रामदरश मिश्र गमले के फूल नहीं, एक खास जमीन में उगे हुए पेड़ है जिसके "फूलों की महक" लोक जीवन की लय के साथ-साथ व्यक्ति जीवन की लय के अन्वेषण में भी है। उन्होंने अपने जीवन के अनुभव के आधार पर यथार्थ जीवन का तथा जीवन के साथ-साथ चलने वाली घटनाओं का निरूपण करने का प्रयास किया है।

मिश्र जी एक अद्भुत व्यक्तित्व के व्यक्ति है। जिस प्रकार से किसी भी पुस्तक के पन्नें को उलटने मात्र से पुस्तक में निरूपित ज्ञान को हासिल नहीं कर सकते हैं। बल्कि उसके लिये उसे पूरी पुस्तक को पढ़ने से ज्ञात होता है। उसी प्रकार रामदरश मिश्र जी को जानने के लिये उनके जीवन, व्यक्तित्व और सम्पूर्ण कृतित्व को जानना जरूरी है।

मैंने रामदरश मिश्र जी की कुछ पत्रिकाओं में छपी कहानियां "वह औरत" पढ़ी तथा टी.वी.सीरीयल में "एक औरत एक जिन्दगी" कहानी देखी। यह पढ़ने व देखने के बाद मैं उनसे अत्यन्त ही प्रभावित हुई तथा अध्यक्ष महोदय डॉ० रमण लाल पाठक जी के निर्देशन से उनके बारे में कुछ बातें जानने को मिली। तभी मैंने यह निश्चय किया कि इनके बारे में विस्तार से अध्ययन करूंगी। यह विचार कर प्रस्तुत शोध-कार्य आरम्भ किया।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। मानव समाज में ही रहकर उसकी गतिविधियों का निरीक्षण करके उसको साहित्य में प्रस्तुत करने की चेष्टा करता है। साहित्यकार के मन में विचारों का उहापोह उठता है। जिसके लिये वह अपने विचारों की अभिव्यक्ति चाहता है। सामान्यत: कोई भी साहित्यकार प्रत्यक्ष रूप से अपने विचारों को प्रकट नहीं करता। इसके लिये उसे अभिव्यक्ति चाहिये ही। साहित्यकार अपनी रचनाओं के पात्रों के माध्यम से ही अपने विचारों को प्रस्तुत कर सकता है। इसके लिये उसे कथा-साहित्य का सहारा लेना पड़ता है। जिसके द्वारा वह अपने भावों को प्रकट कर सकें।

मिश्र जी का कथा-साहित्य का क्षेत्र मुख्य रूप से समाज रहा है। समाज में उन्होंने जो कुछ देखा, भोगा, उसी से व्याकुल होकर उसको अपनी रचनाओं में चित्रित किया है।

...।....

मिश्र जी ने कथा-साहित्य में समाज में पीड़ित और शोषित जन मानस, निर्धनता, भुखमरी, समाज की प्रवंचना का शिकार होती मनुष्य की ईमानदारी एवं सच्चरित्रता तथा पुरुष वर्ग द्वारा तिरस्कृत व यातनाओं भरा जीवन व्यतीत करने वाली नारियों का मार्मिक व सटीक चित्र प्रस्तुत किया गया है। कथा-साहित्य में मिश्र जी ने समसामयिक स्थितियों का चित्रण करते हुए निम्न वर्ग व मध्यम वर्ग के लोगों के जीवन का यथार्थ रूप उभारा है।

चूंकि मिश्र जी कवि भी है और लेखक भी, अतः उनका साहित्य गद्य व पद्य दोनों में ही प्रस्तुत है। लेकिन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में उनके केवल कथा-साहित्य का अनुशीलन ही किया है। जिसमें उनके उपन्यासों व कहानीसंग्रह विवेचन तथा उनमें निरूपित विभिन्न समस्याओं को ही लिया गया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से शोध प्रबन्ध को 7 अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में मिश्र जी का संक्षिप्त जीवन-परिचय प्रस्तुत किया गया है। यो तो मिश्र जी की जीवनी के बहुत से तथ्य यत्र तत्र उपलब्ध हो जाते हैं। किन्तु प्रबन्ध लेखिका ने स्वयं उनसे भेंट करके, पत्र लिख कर तथा निर्देशक महोदय के निर्देशन से प्रकीर्ण सामग्री का सदुपयोग करके उनके जीवन की व्यक्तिगत परिस्थितियों के समाकलन का निजी प्रयास किया है। जीवन एवं परिवेश की विषम परिस्थितियों के फलस्वरूप उनमें कवि, लेखक आदि रूपों का स्वतः समावेश हो गया है। जिनके समन्वित सदुपयोग से मिश्र जी के कथा-साहित्य को उर्जा एवं विविधता प्राप्त होती रही है। आज किसी साहित्यकार के साहित्य को समझने एवं परखने के लिये उनके जीवन एवं व्यक्तित्व से भी भली-भाँति परिचित होना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि उनका सम्पूर्ण जीवन किसी न किसी रूप में उनकी रचनाओं में अवश्य प्रतिबिंबित होता है।

प्रथम अध्याय :-

प्रथम अध्याय में मिश्र जी ने पारिवारिक परिचय, उनका जन्म, बालयकाल, शिक्षा तथा वैवाहिक जीवन को प्रस्तुत किया है। उन्होंने साहित्य में किस प्रकार पदार्पण किया इसके लिये उनको प्रेरणा कहां से मिली उनकी साहित्य के प्रति रुचि को भी प्रस्तुत किया गया है। मिश्र जी किस प्रकार जीवन के साथ

संघर्ष करके जीवन-यापन किया, उसको भी प्रस्तुत किया गया है । साहित्यिक गोष्ठियों, उनके साथ संपर्क, अध्ययन काल तथा उनके साहित्येत्तर क्षेत्र में योगदान को भी प्रस्तुत किया गया है ।

इसी अध्याय के दूसरे भाग में मिश्र जी के व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया गया है । क्योंकि उनके कथा-साहित्य को जानने से पहले उनके व्यक्तित्व का परिचय पाना जरूरी है । क्योंकि साहित्यकार के व्यक्तित्व के अध्ययन से अनभिज्ञ रहना अपूर्ण माना जायेगा । उनका व्यक्तित्व समिष्ट गुणों से युक्त है। उनके व्यक्तित्व को दो भागों में विभाजित किया गया है । पहले भाग में बाह्य पक्ष- जिसके अन्तर्गत वेशभूषा, दिनचर्या, रहन-सहन तथा खान-पान को कियागया है । दूसरे भाग में अन्त: पक्ष-व्यसन, आचार-व्यवहार, भावुकता, सामाजिक-सम्बन्ध, धार्मिक आस्था, मानव संवेदना को प्रकट किया है ।

दूसरा अध्याय :-

दूसरे अध्याय में मिश्र जी ने उपन्यासों को कालक्रम के अनुसार प्रस्तुत किया गया है । इन उपन्यासों को प्रस्तुत करने से पहले उपन्यासों की थोड़ी भूमिका को पेश किया गया है । इसके उपरांत मिश्र जी के समस्त उपन्यासों की कथा-वस्तु का ब्यौरा दिया गया है ।

रामदरश मिश्र जी का प्रथम उपन्यास "पानी के प्राचीर" है । इस उपन्यास में स्वतंत्रता-पूर्व मिलने के पहले की गाँव की स्थिति, जैसे- वहां की जन-मानस का भूख से बिलखना, दरिद्रता, बेकारी, बाढ़ जमींदारों के शोषण से शोषित होते हुए लोगों का जीवन बताया गया है ।

दूसरे उपन्यास "जल टूटता हुआ" में आजादी मिलने के बाद भी राजनीति के आ जाने से स्वार्थी लोगों द्वारा फैली हुई भ्रष्टाचार, बेईमानी, घूसखोरी, अनाचार तथा मानवीय सम्बन्धों में गिरावट तथा कर्तव्यहीनता को बताया गया है ।

तीसरे उपन्यास "सूखता हुआ तालाब" में भी गाँव की ऐसी ही राजनीति व स्वार्थपूर्ण जिंदगी का ब्यौरा दिया गया हैं ।

चौथे उपन्यास "अपने लोग" में अपनापन जताते हुए अपने ही लोगों द्वारा स्वार्थ पूर्ण व्यवहार को दिखाया गया है । साथ ही राजनीति की कूटनीतिक चालों को भी बताया है ।

पांचवें उपन्यास "रात का सफर" में पढ़ी-लिखी नारी को भी ससुराल में यातना पूर्वक जीवन जीते हुए दिखाया गया है तथा इसका विरोध करके आगे बढ़ते हुए दिखाया गया है ।

छठे उपन्यास "आकाश की छत" में बाढ़ के आने से उसके माध्यम से गाँव व शहर के जीवन को तथा उसके विनाश को तहस-नहस से बिखरता हुआ जीवन को दिखाया गया है ।

सातवें उपन्यास "आदिम राग" {बीच का समय} में स्त्री-पुरूष के रोमानी आकर्षण को बताया गया है । भोगवाद, सौंदर्य लालसा के लगाव के कारण यथार्थ चेतना के प्रति उदासीनता को बताया गया है ।

आठवें उपन्यास "दूसरा घर" में मिश्र जी ने उन पढ़े-लिखे बेरोजगार लोगों को गरीबी से जूझता हुआ दिखाया है । जो रोजगार की खातिर अपना घर छोड़कर परदेश में बस गये हैं ।

नवें उपन्यास "बिना दरवाजे का मकान" में बड़े महानगर में होने वाले नैतिक-अनैतिक कार्यों का पर्दाफाश कियागया है । ऐसे लोग स्वयं घिनौने कार्य करने के बावजूद भी दूसरों की छींटा कशी करते हैं ।

तीसरा अध्याय:-

तीसरे अध्याय में कहानी के आरम्भ की भूमिका को प्रस्तुत करके मिश्र जी के कहानी-संग्रहों का विवरण व विवेचन को प्रस्तुत किया गया है । मिश्र जी ने अपनी कहानियों को 8 कहानी संग्रहों में संकलित किया है । उन कहानी संग्रहों को प्रकाशन काल तथा उसमें संकलित कहानियों के नामों तथा उसकी कथावस्तु को बताया गया है ।

{1} खाली घर संग्रह - सात ममती पु0 दिल्ली {1969} - इस संग्रह के अन्तर्गत सीमा, चिठ्ठियों के बीच, माँ, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो,

लाल हथेलियां, खंडहर की आवाज, मुक्ति, खाली घर, एक भटकी हुई मुलाकात, पिता, मंगल यात्रा, एक इन्टरव्यू उर्फ कहानी तीन शतुरमुर्ग की, बादलों भरा एक दिन, एक और यात्रा, एक औरत, एक जिंदगी, छुटता हुआ नगर आदि कहानियां संकलित हैं ।

§2§ एक वह संग्रह – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली §1974§ – इसमें एक वह, सड़क निर्णयों के बीच निर्णय, उत्सव, पराया शहर, दूरियां, घर, मिसफिट, जमीन, आधुनिक, पिंजड़ा, संबंध आदि कहानियां है ।

§3§ दिनचर्या संग्रह – प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली §1979§ – इस संग्रह के अंतर्गत दिनचर्या, मुर्दा मैदान, कर्ज, एक रात, बेला मर गई, कहां जाओगे, गीटू, गपशप, ऊंची इमारत, आरम्भ, जित्तन भइया, भगवन्त कथा, ठहरा हुआ समय, मां, एक बिखरा हुआ दिन, एक अधूरी कहानी है ।

§4§ सर्पदंश संग्रह – पराग प्रकाशन, दिल्ली §1982§ :-
इसमें अतीत का विष, सर्प दंश, आखिरी चिठ्ठी, टूटे हुए रास्ते, घर लौटने के बाद, प्रतीक्षा, मनोज जी, पशुओं के बीच, इज्जत, सवाल के सामने आदि है ।

§5§ बसंत का एक दिन – प्रभात प्रकाशन, दिल्ली §1982§ :-
इसके अन्तर्गत एक अधूरी कहानी, पराया शहर, निर्णय, आखिरी चिठ्ठी, बसंत का एक दिन अकेला मकान आदि है ।

§6§ इकसठ कहानियां – प्रभात प्रकाशन, दिल्ली §1984§ :-
इस संग्रह के अन्तर्गत सभी संग्रहों की कहानियां आ जाती हैं ।

§7§ मेरी प्रिय कहानियां – साहित्य सहकार, दिल्ली §1990§ :-
मेरी प्रिय कहानियों में सड़क, मां, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो, सीमा, मिसफिट, मुर्दा मैदान, एक औरत : एक जिन्दगी, खाली घर, एक इन्टरव्यू उर्फ तीन शतुरमुर्गों की, निर्णयों के बीच निर्णय, सर्प दंश, अतीत का विष, लड़की, कुत्ते, एक भटकी हुई मुलाकात, मुक्ति, पशुओं के बीच, घर, पड़ोसिन, जमीन आदि है ।

§8§ अपने लिये - परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली - §1992§ :-
इसके अन्तर्गत डर, रोटी, अकेली वह, अपने लिये, खोया हुआ दिन, वह औरत, अलझन, एक मामूली आदमी, कर्फ्यू, मकान, भविष्य, कुत्ते, नोकरी, शेष यात्रा, हंसी, सोनू कब आयेगा पापा, आदि संकलित हैं ।

चौथा अध्याय :-

चौथे अध्याय का मुख्य प्रतिपाद्य मिश्र जी के कथा-साहित्य में निहित विभिन्न समस्याओं का निरूपण करना है । यदि हम अपने आसपास के जीवन पर प्रकाश डालें तो हमें ज्ञात होगा कि हमारा समाज अनेक समस्याओं से परिपूर्ण है । आबादी के बढ़ने के साथ मनुष्य की आवश्यकताएं भी बढ़ती जाती हैं । आवश्यकताओं के अभाव के परिणाम स्वरूप ही समस्याएं पैदा होती हैं । यदि साहित्य समाज का दर्पण है तो ये समस्याएं जीवन के सामने आयेंगी । मिश्र जी ने इन समस्याओं का निराकरण करने के लिये तथा पाठकों की तरफ अपना ध्यान आकर्षित करने के लिये इन समस्याओं को अपने कथा साहित्य में स्थान दिया क्योंकि उपन्यास का संबंध यथार्थ से है । और यथार्थ का निरूपण करने के लिये प्रत्येक कदम पर अनेक समस्याएं आती हैं ।

मिश्र जी ने एक प्रबुद्ध सेनापति की भांति, स्वयं उन्होंने सामाजिक जीवन में संघर्ष किया । और अपने आसपास के परिवेश के किसान, मजदूर तथा निम्न वर्ग के जीवन को देखा । इसके साथ ही नगर में भी नागरिय जीवन से परिचित होकर विभिन्न अवस्थाओं का विश्लेषण बड़ी मार्मिकता व कुशलता से किया । समाज की तत्कालीन परिस्थितियां, भुखमरी, गरीबी, बेकारी, स्वार्थ परता, भोगों की कुट नीतियां तथा अत्याचार को देखकर उनके मन में एक टीस-सी उठती है ।

शोध प्रबंध का मुख्य प्रतिपाद्य कथा-साहित्य की समस्याओं को लेकर है अतः मिश्र जी के कथा-साहित्य में निरूपित समस्याओं को दो अध्यायों में विभाजित किया है । प्रस्तुत पहले अध्याय में गांव में फैली समस्याएं, गांव की समस्याओं के अंतर्गत - जाति भेदभाव की भावना, बेकारी की समस्या, जमींदार तथा पूंजीपतियों द्वारा शोषित जन मानस, शिक्षित वर्ग की रोजगार की समस्या,

बाढ़ की समस्या, गरीबी, भुखमरी की समस्या, विधवा की समस्या, राजनीति के फलस्वरूप फैली भ्रष्टाचार, घूसखोरी की समस्या, दहेज की समस्या, अंध विश्वास की समस्या, नैतिक-अनैतिक घटनाओं की समस्याएं, लड़का व लड़की में भेदभाव की समस्या, शिक्षा का अभाव आदि समस्याओं को लिया है ।

पांचवाँ अध्याय :-

पांचवें अध्याय में नगर में फैली समस्याओं के अन्तर्गत - शिक्षा में राजनीति की व्यापकता तथा राजनीति की आड़ में गलत कार्यों का होना, पढ़े-लिखे शिक्षित व्यक्तियों के लिये रोजगार की समस्या, बसों की समस्या, मालिकों का नौकरों के प्रति दुर्व्यवहार, मकान की समस्या, भ्रष्ट पुलिस, पढ़ी-लिखी नारी होने पर भी नारी की दुर्दशा, आधुनिकता की आड़ में गलत कार्य को करना, नारी समस्या आदि अनेक छोटी-बड़ी समस्याएं हैं जिनको मिश्र जी ने अपने कथा-साहित्य में निरूपित किया है ।

छठा अध्याय :-

छठे अध्याय में मिश्र जी का मानवीय मूल्य संवेदना के रूप को लिया गया है । जिस प्रकार मिश्र जी का सामाजिक चेतना को स्पष्ट किया गया है। उसी प्रकार उनका मानवीय संवेदना के बिंदुओं को भी स्पष्ट किया गया है । वस्तुत: सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है । सामाजिक विसंगतियों के परिणाम स्वरूप कई बार ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है, जो मानवीय संवेदना को उभारती है । जिस प्रकार साहित्यक चेतना को समाज में उभारने का प्रयत्न किया जाता है । उसी प्रकार कभी-कभी सृजन प्रक्रिया का उद्देश्य मानवीय संवेदना को उभारना भी होता है । मिश्र जी स्वयं मानवीय संवेदना के कवि हैं । अत: उन्होंने जहां कहीं संवेदनीय तत्वों को देखा, उसका अपने कथा-साहित्य में निरूपण किया है । क्योंकि आज भौतिकवादी दुनिया में सभी किसी न किसी स्वार्थ में लिप्त रहते है । उनके अंदर की चेतना लुप्त हो गयी है । मानवीयता तो केवल नाम मात्र रह गयी है । परन्तु फिर भी कुछ ऐसा है, शेष बाकी है, जिसके आधार पर यह दुनिया चलती है । संबंध व्याप्त रहते हैं । उन्हीं मानवता वाले संबंधों की

तरफ ही मिश्र जी पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं । ताकि उनकी सोयी हुई चेतना जागृत हो सके । उन्हीं तत्वों को उभारने का प्रयत्न किया गया है । औदार्य, नीति परायणता, परदुखकातरता, सत्य के प्रति प्रेम आदि मूल्यों का जो ह्रास होता दिखाई पड़ रहा है, उससे मिश्र जी अत्यन्त व्यथित है । उन्होंने अपनी व्यथा को अनेक रूपों में व्यक्त किया है । वे चाहते हैं कि सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक मूल्यों का सवंर्धन व व्यवहार समाज में बराबर होता रहे । अतः इनके कथा-साहित्य के मूल्य चिंता की महत्वपूर्ण समस्या है ।

सातवाँ अध्याय :-

सातवें अध्याय में मिश्र जी के कथा-साहित्य के कथा संगठन शिल्प पर विचार किया गया है । प्रत्येक साहित्यकार की भाषा शैली पृथक होती है । यह प्रत्येक के विचारों, भावों, के अनुरूप ही निखार लाती है । मिश्र जी ने पात्रों के अनुसार अपनी भाषा का प्रयोग किया है । उसके अनुरूप उन्होंने विभिन्न वर्गों की भाषा को प्रस्तुत किया है । मिश्र जी ने भाषा की कुशलता प्रदान करने के लिये प्रतीकात्मक, बिम्बात्मक, चित्रात्मक, हास्य-व्यंग्यात्मक, क्रिया-व्यापारों के सुन्दर चित्र प्रस्तुत किये हैं । जिनसे उनकी भाषा सौंदर्य युक्त हो गयी है । इसके अलावा मिश्र जी ने संवादों का भी पात्रों के अनुरूप कुशलता से प्रयोग किया है । उनमें नाटकीयता, माधुर्य मानसिक स्थितियों, तथा भावुकतापूर्ण भाषा को प्रयुक्त किया है । इसके साथ शब्द-ध्वनि, अभिव्यंजना, विशेषणों, विशेषण वक्रता तथा अलंकारों का प्रयोग करके भाषा को चार चांद लगा दिये हैं । भाषा किस प्रकार से सतत रूप से एक नदी की तरह बहती जाती है । जिससे उसमें ओज, माधुर्य, गतिशीलता, शुद्धी व स्वाभाविकता नष्ट न हो, उसका भी पूरा-पूरा ध्यान रखा है ।

कवि होने के कारण मिश्र जी के कथा-साहित्य पर भी कविता पन छाया हुआ है । अतः उनके कथा-साहित्य में प्रयुक्त कविताओं को भी प्रस्तुत किया गया है । मिश्र जी के उपन्यासों एवं कहानियों से समाविष्ट विभिन्न भाषाओं के शब्द भंडार पर विचार किया गया है । इसके अतिरिक्त उनके कथा-साहित्य के मुहावरे, कहावतों का भी सुन्दर प्रयोग करके उनकी भाषा को शक्ति, स्वाभाविकता एवं सौंदर्य प्रदान किया है ।

इसके साथ ही इस अध्याय में मिश्र जी द्वारा प्रयोजित विभिन्न शैलियों को भी प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न प्रकार की शैली को प्रकट करने में मिश्र जी ने काफी कौशल दिखाया है। इनकी शैली में डायरी शैली पत्र शैली, भाव-अभिव्यंजना शैली, संकेत शैली, प्रतीक शैली, बिम्ब शैली, संवाद शैली तथा कुछ अन्य शैलियों का प्रयोग करके कथा-साहित्य को सौंदर्य प्रदान किया है।

उपसंहार :-

संक्षेप में, हम कह सकते है कि रामदरश मिश्र जी एक ऐसे व्यक्तित्व वाले सर्जक है जिन्होंने अपने गहरे व विशद अनुभव के आधार पर परिस्थितियों से संघर्ष करके उन तत्वों को पेश किया है जिनसे समाज सदैव विचलित होता रहा है। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों व कहानियों में मनुष्य द्वारा मनुष्य पर शोषण करने वाले तत्वों को, जिसमें निरीह व्यक्ति की विवशता, लाचारी व्यक्त है, तथा इन सब का लाभ उठाने वाले क्रूर राजनीतिक व सामाजिक कारणों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जिनके पाठ्य से साधारण व्यक्ति का हृदय भी विचलित हो उठता है। इन तत्वों को प्रस्तुत करने के लिये मिश्र जी ने काव्यमयी भाषा और शैलिक गठन के कारण प्रभावशाली बनाया है। भाषिक संरचना तथा शैल्पिक गठन के कारण उपन्यास में एक लय तथा संगीत की गूंज नजर आती है। विभिन्न प्रकार के बिम्ब, प्रतीक व ध्वनियों के प्रयोग से गांव की यथार्थ स्थिति का चित्र उभारा है। उसी के अनुरूप लोकोक्ति व मुहावरों का प्रयोग करके उसमें आन्तरिक दीप्ति प्रदान की है। इस प्रकार मानवीय चेतना को प्रस्तुत कर मानवता का संदेश दिया है।

मेरे शोध कार्य को सम्पूर्ण करने के लिये गुरुजनों की आशीष तथा अन्तर्मन की पुकार ने ही सदैव सम्बल प्रदान किया है। सर्वप्रथम में डा० रमणलाल पाठक जी का आभार मानती हूं जो मेरे गुरू व विभाग के अध्यक्ष महोदय है। इनके पग-पग पर मार्गदर्शन, प्रोत्साहन तथा प्रेरणा के साथ अपना कार्य सम्पन्न कर सकी हूं। उनका मैं किन शब्दों में कृतज्ञता को व्यक्त करूं। इसके साथ ही हिन्दी विभाग के अन्य गुरुजनों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूं जो मेरे कार्य को आगे बढ़ाने के लिये प्रोत्साहन देते रहे है। इसके साथ में विश्व विद्यालय की हंसा महेता

लायब्रेरी के अधिकारी के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूं । जिसके सहयोग से मुझे समय समय पर पुस्तके प्राप्त होती रही, जिसकी मदद से मेरा कार्य सम्पन्न हुआ ।

इसके अलावा मैं अपने घर के बुर्जुगों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने मेरे आने - जाने तथा कार्य में लिप्त रहने पर समय के अभाव को ध्यान में न रखकर मुझे गृह-कार्य के भार से कुछ मुक्त रखा । इसके साथ ही पति का आभार को किस रूप में व्यक्त करूं जिनके प्रोत्साहन व सहयोग से मैं अपना शोध-कार्य को सम्पन्न कर सकी हूं क्योंकि उन्हीं की प्रेरणा से प्रेरित होकर मैंने शोध-कार्य आरम्भ किया ।

जहां तक हो सका है टाइपिंग की गलतियों को सुधारने का प्रयत्न किया है फिर भी कुछ त्रुटियों के रह जाने के कारण मैं क्षमाप्रार्थी हूँ ।

विनीत
(श्रीमती अंजली दादलानी)
अंजली दादलानी